वर्ष - 1, अंक -3 अगस्त 2017
जे 7, श्रीराम नगर, रायपुर (छ.ग.)
आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -

राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

प्यारे दोस्तों,

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं. किलोल का यह तीसरा अंक आपके हाथ में है. हमेशा की तरह यह अंक भी http://www.alokshukla.com पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. किलोल परिवार में हम अपने नये सहयोगियों का स्वागत करते हैं. आपसे पुन: अनुरोध है कि पत्रिका का डाउनलोड करके अपनी कक्षा के बच्चों को अवश्य ही पढ़ने के लिये दें और अच्छी रचनाएं किलोल में प्रकाशन के लिये भी भेजें. अपनी रचनाएं आप dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेज सकते हैं। सभी बच्चों को प्यार के साथ .....

आलोक शुक्ला

अमर शहीद वीर नारायण सिंह

वीर नारायण सिंह का जन्म 1795 में हुआ था. उनके पिता सोनाखान के जमींदार रामसाय थे. पिता की मृत्यु के बाद 1830 में वे सोनाखान के जमींदार बने. वर्ष 1856 में छत्तीसगढ़ में भयानक सूखा पड़ा. लोग भुखों मरने लगे. कसडोल के व्यापारी माखन का गोदाम अन्न से भरा था. वीर नारायण ने उससे अनाज गरीबों में बांटने का आग्रह किया लेकिन वह तैयार नहीं हुआ. इसके बाद उन्होंने माखन के गोदाम के ताले तुड़वा दिए और अनाज निकाल ग्रामीणों में बंटवा दिया. उनके इस कदम से नाराज ब्रिटिश शासन ने उन्हें 24 अक्टूबर 1856 में संबलपुर से गिरफ्तार कर रायपुर जेल में बंद कर दिया. वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय कुछ देशभक्तों ने कारागार से एक गुप्त सुरंग बनाकर नारायण सिंह को मुक्त करा लिया.

जेल से मुक्त होकर वीर नारायण सिंह ने 500 सैनिकों की एक सेना गठित की और 20 अगस्त, 1857 को सोनाखान में स्वतन्त्रता का बिगुल बजा दिया. डिप्टी कमिश्नर इलियट ने स्मिथ नामक सेनापति के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना भेजी. नारायण सिंह ने शुरू में ऐसा धावा बोला कि अंग्रेजी सेना को भागते भी नहीं बना. परन्तु सोनाखान के आसपास के अनेक जमींदार अंग्रेजों से मिल गये. इस कारण नारायण सिंह को पीछे हटकर एक पहाड़ी की शरण में जाना पड़ा. अंग्रेजो ने सोनाखान में घुसकर पूरे नगर को आग लगा दी. नारायण सिंह काफी समय तक गुरिल्ला युध्द करते रहे, पर आसपास के जमींदारों की गद्दारी से नारायण सिंह फिर पकड़े गये. उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाने का नटक किया गया. वीर नारायण सिंह को मृत्युदंड दिया गया। 10 दिसंबर 1857 को ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सरेआम तोप से उड़ा दिया, स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद वहाँ 'जय स्तम्भ' बनाया गया, जो आज भी छत्तीसगढ़ के उस वीर सपूत की याद दिलाता है।

हिरण की सुझबुझ

लेखक - राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, आर.टी.ई. वाच प्रोग्राम मैनेजर

बहुत समय पहले की बात है, धमतरी जिले के पास एक घना जंगल हुआ करता था, जिसमे बहुत से जानवर आपस में मिलजुल कर रहते थे, वहीं पर एक शेर भी रहा करता था । जो अपनी ताकत से कई दिनों से

वहा पर रहने बाले हिरणो को डराया करता था । एक बार एक हिरण ने साहस दिखाया और शेर के विरोध में सभी हिरणों के साथ - साथ जंगल में रहने वाले अन्य जानवरों को भी एकत्रित किया और उन सभी से कहा कि यदि हमें जंगल में शांति और खुशहाली से रहना है तो हमें डरना छोड़ना होगा, और मिलजुलकर शेर का मुकाबला करना होगा ।

हिरण की बात सुन कर सभी जानवर एकजुट होकर शेर से लड़ने को तैयार हो गए । जब ये बात शेर को पता चला की सब जानवर एकसाथ मिलकर मुझसे लड़ने आ रहे है, तो वह स्वंय ही डर के कारण जंगल छोड़ कर भाग गया । सभी जानवरों ने हिरण के सुझबुझ की बहुत प्रशंसा की और फिर सभी आपस में मिलजुल कर बड़े आराम व ख़ुशी से रहने लगे ।

(इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि " एकता में बहुत ताकत होती है ")

1) किस जिले के पास जंगल था?
2) शेर किनको डराया करता था?
3) हिरण ने शेर से बचने का क्या उपाय बताया था?
4) कौन डर से जंगल छोड़ कर भाग गया?

हवा का दबाव

लेखक - शेख अजहरुद्दीन, आरटीई वाच प्रोग्राम मेनेजर

बच्चों आज हम हवा के दबाव का अध्ययन करेंगे | हमे आवश्यकता है एक खाली पानी की बोतल, एक स्ट्रा पाइप, एक बलून और ग्लू या गोंद की | सबसे पहले हम बोतल में हम बोतल में कैंची की सहायता से एक छेद करेंगे और उसमे गोंद (ग्लू) की मदद से स्ट्रा पाइप को लगा देंगे | अब हम बोतल के मुंह में बलून को लगाएंगे और उसे अन्दर की तरफ कर देंगे | हम बोतल के मुंह में हवा भरकर देखते है तो बलून फूलता है अब हम पाइप में हवा को अन्दर से बाहर की तरफ खींचते है तब हम देखते हैं की बलून फुल रहा है सोचो ऐसा क्यूँ होता है | पाईप में बाहर

से अन्दर की ओर हवा भरते है तब भी बलून बोतल से बाहर की ओर फूलता है | यह होता है हवा के दबाव के कारण जब हम हवा खींचते हैं तब भी दबाव होता है और जब हम हवा भरते हैं तब भी दबाव होता है |

अब सोचें ऐसा क्यूँ होता है

- पाइप से हवा अन्दर से बाहर खींचने पर बलून फूलता क्यूँ है ?
- बोतल में पाइप क्यूँ लगाया गया था अगर न लगा हो तो क्या होगा ?
- पाईप को ऊँगली से बंद कर बोतल में हवा भरें तो क्या होगा ?
- बलून की जगह क्या कोई दूसरी वस्तु लगाई जा सकती है ?

बूझो तो जानें

1. कद के छोटे,
   करम के हीन,
   बीन बजाने के शौकीन,
   बताओ कौन ?

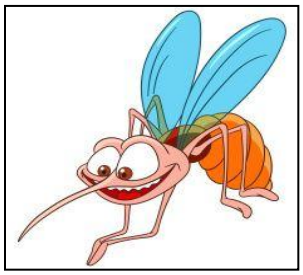

2. दिन में सोये,
   रात में रोये,
   जितना रोये,
   उतना खोये

3. घुसा आंख में मेरे धागा,
   दर्जी के घर से मैं भागा

4. अगर नाक पे मैं चढ़ जाऊं,
   कान पकड़कर खूब पढ़ाऊं

5. रंग है मेरा काला,
   उजाले में दिखती,
   अंधेरे में छिप जाती

उत्तर - 1. मच्छर, 2. मोमबत्ती, 3. बटन, 4. चश्मा, 5. परछाई

Baa Baa Black Sheep

Baa baa black sheep
Have you any wool?
Yes sir, yes sir,
Three bags full.

One for the master,
And one for the dame,
And one for the little boy
Who lives down the lane.

चंदा मामा

चंदा मामा दूर के,

पुए पकाए बूर के,

आप खायें थाली में,

मुन्नी को दें प्याली में.

प्याली गई टूट,

मुन्नी गई रूठ,

लायेंगे हम प्यालियां,

बजा बजा के तालियां.

मुन्नी को मनायेंगे, दूध मलाई खायेंगे.

माचिस से फूल बनायें

आवश्यक सामग्री

- माचिस की तीलियाँ – 16
- कोल्ड ड्रिंक पीने वाली स्ट्रॉ – 01
- गोंद
- मोती – 01

चार्ट पेपर के दो गोल टुकड़े काट लीजिये और इन्हें आपस में चिपका लीजिये. चार्ट पेपर के इन टुकड़ों का आकार माचिस की तीलियों से छोटा होना चाहिए. अब माचिस की 4 तीलियाँ इस गोले के बीच में इस तरह चिपका दीजिये कि एक प्लस (+) का चिन्ह बन जाए.

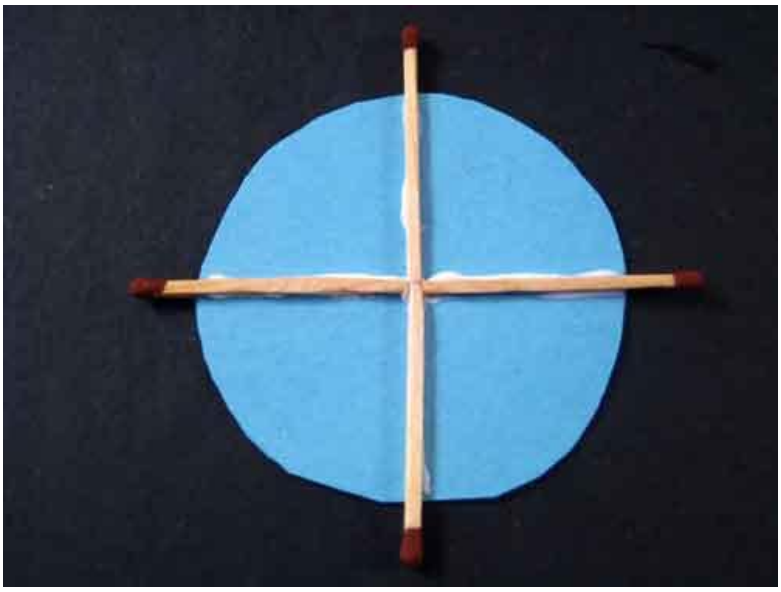

अब माचिस की 12 तीलियाँ इस प्रकार तिरछी चिपकाइए कि आपका फूल 16 बराबर भागों में बंट जाए. इसके बाद फूल के बीचों-बीच एक सुन्दर नग या मोती चिपका दीजिये.

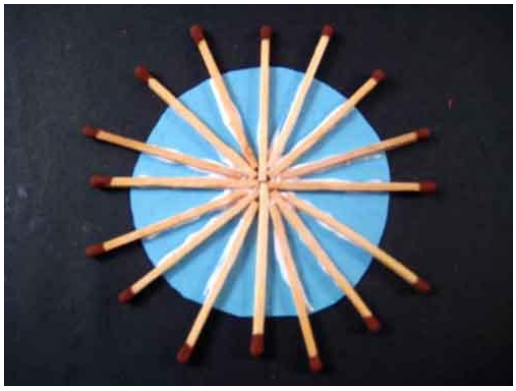

फूल के पीछे की तरफ एक स्ट्रॉ चिपकाइए. मचिस की तीलियों का रंग बिरंगा फूल तैयार है.

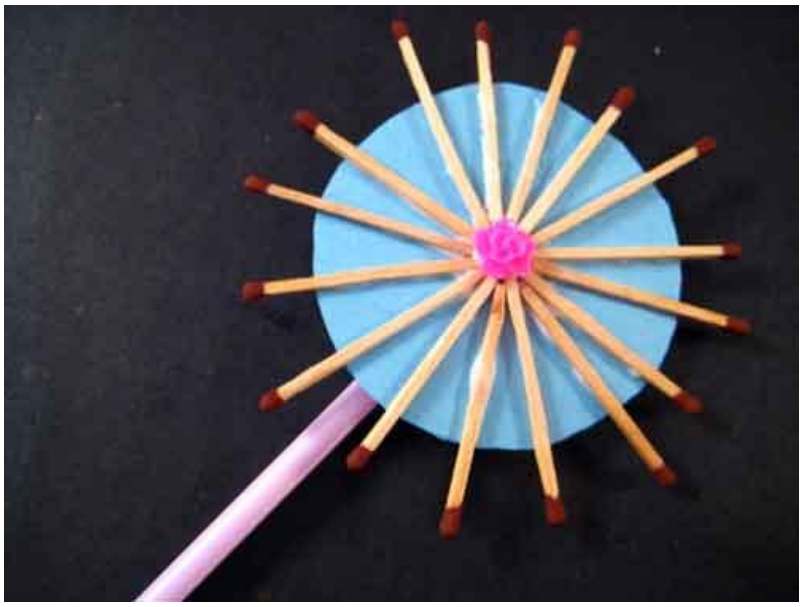

हंसगुल्ले

तू हमेशा ख़राब बच्चों के साथ खेलता है, अच्छे बच्चों के साथ क्यों नहीं खेलता?
कैसे खेलूं, अच्छे बच्चों की मम्मी उन्हें मेरे साथ खेलने से मना कर देती है!

पप्पू, तुम्हारे गणित मे इतने कम नंबर क्यों आए?
गैर हाजिरी के कारण!
क्या तुम गणित की परिक्षा के दिन गैर हाजिर थे?
मैं नहीं मेरे बगल में बैठने वाली लडकी गैर हाजिर थी!

भूत,वर्तमान और भविष्य से तुम क्या समझते हो.?
जी, मेरे दादाजी भूत, मेरे पिताजी वर्तमान और मैं उनका भविष्य हूं...

पसीने की क्या दवाई होगी
दवाई क्यों, बस धूप में सुखा लिया करो

चित्र देखकर कहानी लिखो

किलोल के पिछले अंक में कहानी लिखने के लिये एक चित्र दिया गया था जिसपर जी संजीव कुमार सूर्यवंशी शि. प. (गणित) सक्ती ने कहानी लिखी है। चित्र और कहानी हम प्रकाशित कर रहे हैं.

सबकी जवाबदारी

एक दिन छुट्टी के बाद साक्षी और सुनीता शाम को टहलने निकले. कुछ दूर गये तो उन्होने देखा कि बहुत सारा कचड़ा फैला हुआ था. केले के छिलके, पानी की खाली बाटल, नमकीन मिक्सचर के रेपर आदि सड़क पर फैले हुए थे. यह देखकर उन्हें बहुत निराशा हुई. वे सोचने लगे कि किसी को भी इस तरह कचड़ा नही फैलाना चाहिए. उन्हे अपने शिक्षक

की बात याद आई कि साफ-सफाई हम सब की जवाबदारी है. फिर क्या था, दोनों सफाई करना शुरू कर दिया. कुछ ही देर बाद उनके सहपाठी संजीव और सुरेश भी आ गये. सुनीता और साक्षी को सफाई करते देखकर वे भी सफाई में उनकी सहायता सहायता करने लगे. संजीव का घर पास में ही था. वह भागकर गया और घर से पालीथिन और झाड़ू लेकर आया. चारों ने मिलकर सफाई की और कुछ ही देर में पूरा कचड़ा साफ हो गया. इसके बाद सब बहुत खुश हुए और मिलकर खेलने लगे.

अब इस चित्र को देखकर कहानी लिखो और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर मेल कर दो. हम अगले अंक में उसे प्रकाशित करेंगे.

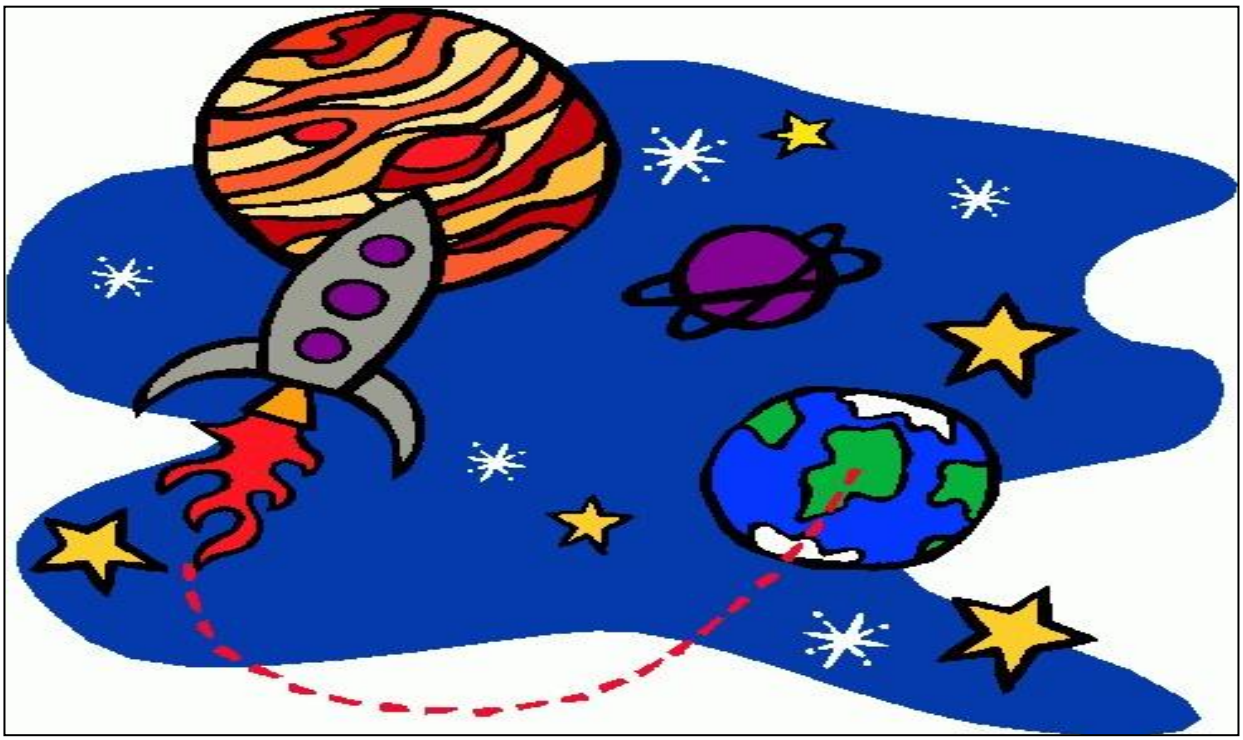

वर्ग पहेली

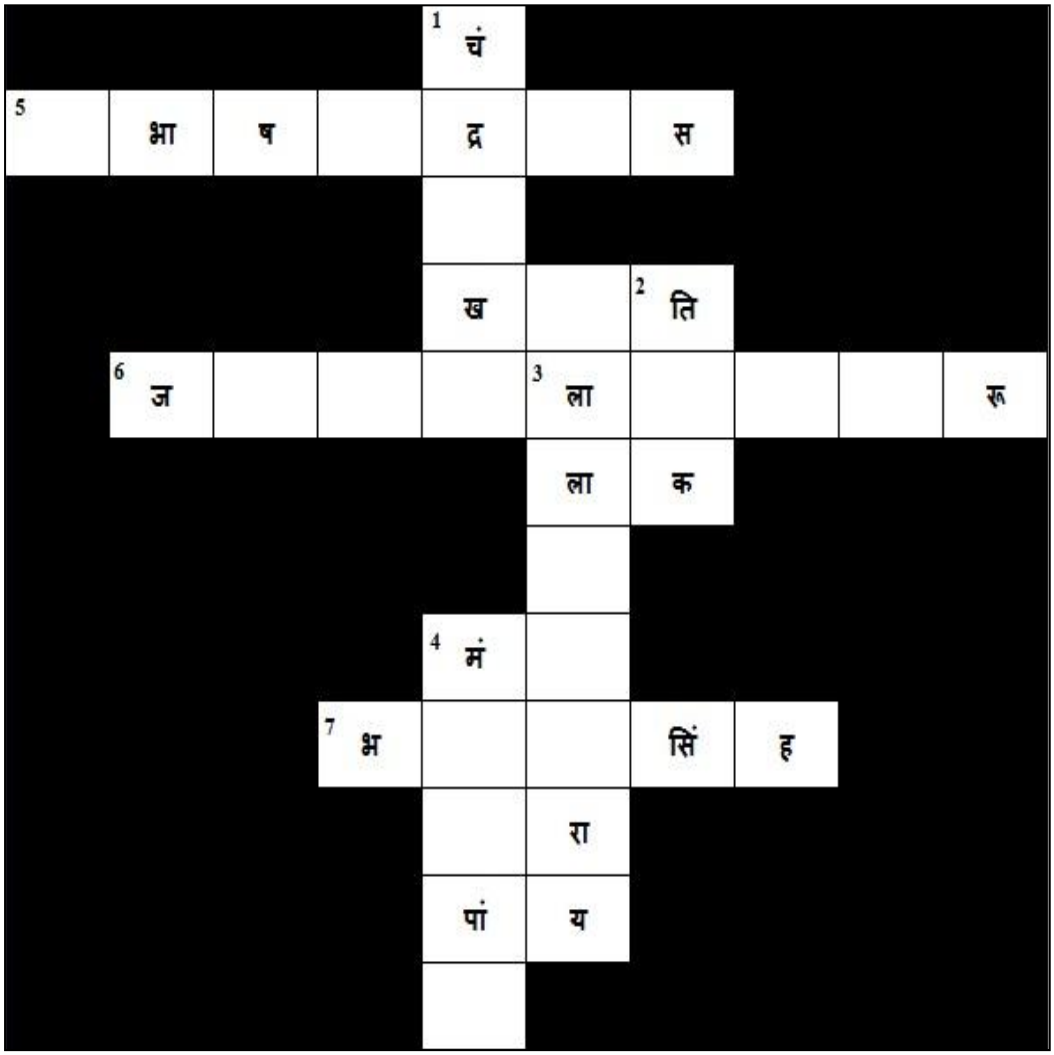

उत्तर

1. चंद्र शेखर (आज़ाद) 2. (बाल गंगाधर) तिलक
3. लाला लाजपत राय 4. मंगल पांडे
5. सुभाष चंद्र बोस 6. जवाहरलाल नेहरू 7. भगत सिंह

संपादक एवं प्रकाशक - डा. आलोक शुक्ला जे-7, श्रीराम नगर, रायपुर

फोन: 7000727568, ई-मेल: dr.alokshukla@gmail.com, website: http://www.alokshukla.com